Doctor®
FEEDS
Where Care Meets Nutrition

क्या आपका डेयरी व्यवसाय भविष्य के लिये तैयार है ?

आज का ध्यान, कल का समाधान

Doctor®
FEEDS
Where Care Meets Nutrition

आज का ध्यान, कल का समाधान

डॉक्टर फीड्स अपनी उच्च गुणवत्ता नीति एवं अपने मूल सिद्धांतों के साथ **35 वर्षों** के अटूट विश्वास से पशु पालकों की सेवा में सेवारत

हमारे मूल सिद्धांत :

- **ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण :** निरंतर गुणवत्ता और भरोसेमंद सेवा
- **नवाचार एवं उत्कृष्टता:** उत्पादों और प्रक्रियाओं में निरंतर सुधार
- **सततता:** दीर्घकालिक प्रभाव के लिए जिम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा
- **लोग एवं साझेदारियाँ:** कर्मचारियों, डीलरों और वितरकों को विकास भागीदार के रूप में सम्मान
- **ईमानदारी एवं नैतिकता:** पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा और जवाबदेही

हमारी गुणवत्ता प्रतिबद्धता:

- कच्चे माल से लेकर अंतिम उत्पाद तक कठोर गुणवत्ता नियंत्रण
- पूर्णतः स्वचालित, आधुनिक मैन्युफैक्चरिंग तकनीक
- गुणवत्ता प्रणालियों और प्रक्रियाओं में निरंतर सुधार
- गुणवत्ता-सचेत कार्यबल के निर्माण हेतु नियमित प्रशिक्षण
- ग्राहक प्रतिक्रिया के आधार पर उत्पाद सुधार

हमारा वादा :

- भरोसेमंद गुणवत्ता
- किसानों के साथ जीवनभर का साथ
- बेहतर उत्पादन देने वाला पोषण

प्रतिबद्धता :

- किसानों, साझेदारों, कर्मचारियों और सतत विकास के प्रति अटूट समर्पण

डेयरी व्यवसाय की उत्कृष्टता के तीन मूल स्तंभ

डेयरी फार्मिंग में स्थायी सफलता तीन आपस में जुड़े हुए स्तंभों पर आधारित होती है : **नस्ल, पोषण और प्रबंधन**। जब इन तीनो स्तंभों को एक साथ सही तरीके से अपनाया जाता है, तो परिणामस्वरूप अधिक दूध उत्पादन, बेहतर दूध गुणवत्ता और लंबे समय तक स्वस्थ व उत्पादक पशु प्राप्त होते हैं।

1. नस्ल (Breed)

उत्कृष्ट डेयरी नस्लों का विकास और उनका संरक्षण, लाभकारी और स्थिर दूध उत्पादन की नींव है। उन्नत आनुवंशिक क्षमता वाले पशु न केवल अधिक दूध देते हैं, बल्कि दीर्घकालिक लाभ भी प्रदान करते हैं।

2. पोषण (Nutrition)

डेयरी पशुओं की आनुवंशिक क्षमता का पूर्ण उपयोग तभी संभव है, जब उन्हें वैज्ञानिक, संतुलित और सटीक पोषण दिया जाए। सही पोषण न केवल दूध उत्पादन बढ़ाता है, बल्कि पशु स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता और लंबी उत्पादक आयु को भी बनाए रखता है।

डेयरी पोषण के मुख्य घटक :

A. हरा-सूखा चारा (Forages)

उच्च गुणवत्ता वाला चारा डेयरी पोषण की आधारशिला है। चारे की सही कटाई, संरक्षण और भंडारण के साथ-साथ उचित चारा-पशु आहार अनुपात बनाए रखना, रुमेन स्वास्थ्य और दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

B. पशु आहार / कंसंट्रेट (Concentrates)

डेयरी पशुओं में आनुवंशिक क्षमता, आयु, दुग्धावस्था, गर्भावस्था और उत्पादन स्तर अलग-अलग होते हैं। इसलिए पोषण को एक-सा नहीं बल्कि आवश्यकता के अनुसार तैयार किया जाना चाहिए। रणनीतिक रूप से तैयार पशु आहार हर शारीरिक अवस्था में सटीक पोषक तत्व प्रदान करता हैं, जिससे बेहतर स्वास्थ्य, प्रजनन और निरंतर उत्पादन सुनिश्चित होता है।

C. साईलेज (Silage)

साईलेज एक उच्च पोषक तत्वों वाला किण्वित चारा है, जो हरे चारे की कमी के समय बहुत उपयोगी होता है। यह दूध उत्पादन को स्थिर रखता है, फ़ीड एफिशिएंसी बढ़ाता है और श्रम और चारा लागत को कम करता है।

D. सूक्ष्म पोषक तत्व एवं पानी (Micronutrients & Water)

आवश्यक विटामिन और खनिजों की पूर्ति तथा स्वच्छ और ताजे पानी की निरंतर उपलब्धता पोषण की कमी रोकने, मेटाबॉलिक क्रियाओं को बेहतर बनाने और कुल प्रदर्शन बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

3. प्रबंधन (Management)

सही डेयरी प्रबंधन, तनाव कम करता है, रोगों का जोखिम घटाता है और कुल उत्पादकता बढ़ाता है। अच्छे प्रबंधन वाले पशु चारा और पानी अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करते हैं। लगातार और अधिक मात्रा में दूध देते हैं। स्वास्थ्य व प्रजनन संबंधी समस्याओं का सामना कम करते हैं।

डेयरी प्रबंधन के महत्वपूर्ण पहलू :

1. **आवास एवं पशु आराम :** साफ-सुथरा, हवादार और पर्याप्त स्थान वाला शेड
2. **दुहाई प्रबंधन :** समय पर और स्वच्छ दुहाई से दूध की गुणवत्ता और थन स्वास्थ्य बेहतर रहता है
3. **प्रजनन प्रबंधन :** योजनाबद्ध ब्रीडिंग और सही हीट डिटेक्शन से दुग्ध चक्र और पशुओं का विकास सुनिश्चित होता है
4. **स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण (Health & Disease Control)** - स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण के अंतर्गत प्रमुख स्वास्थ्य प्रथाएँ :

A. **रोकथाम आधारित देखभाल :** नियमित टीकाकरण, कृमिनाशक दवा और स्वास्थ्य निगरानी

B. **थनैला नियंत्रण :** नियमित थन जांच और सख्त स्वच्छता

C. **मेटाबॉलिक एवं प्रजनन स्वास्थ्य :** प्रसव, पोषण और दुग्धकाल का सही प्रबंधन

समग्र दृष्टिकोण का परिणाम

ये तीनो स्तंभ मिलकर डेयरी उत्कृष्टता का एक समग्र मॉडल तैयार करते हैं, जो प्रगतिशील डेयरी किसानों को प्रदान करता है :

- ☑ अधिक लाभ
- ☑ बेहतर पशु कल्याण
- ☑ दीर्घकालिक और टिकाऊ डेयरी व्यवसाय

जैसा कि आप जानते हैं, डेयरी पशुओं में **आनुवंशिक क्षमता, आयु, दुग्धावस्था, गर्भावस्था और उत्पादन स्तर** अलग-अलग होते हैं। इसलिए सभी पशुओं के लिए एक-सा पोषण या प्रबंधन सही परिणाम नहीं देता। इसी वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए, Doctor Feeds आपके बेहतर और लाभकारी पशुपालन के लिए निम्नलिखित स्टेज-वाइज़ केयर प्रोग्राम्स प्रस्तुत करता है जो पशु के जीवन के हर महत्वपूर्ण चरण को कवर करते हैं।

A. डॉक्टर कॉफ टू काउ कार्यक्रम (Calf to Cow Care Program)

1. डॉक्टर कॉफ स्टार्टर (Doctor Calf Starter)

जैसा कि आप जानते हैं, बछिया का शुरुआती पोषण ही उसके पूरे जीवन की उत्पादकता तय करता है।
आज की बछिया ही कल की दूध देने वाली गाय या भैंस है। जन्म के बाद बछिया का पेट और पाचन तंत्र कमजोर होता है। माँ का दूध केवल शुरुआती कुछ दिनों के लिए ही पर्याप्त होता है। तेज़ वृद्धि, मजबूत हड्डियों और अच्छे रुमेन विकास के लिए ठोस और संतुलित आहार ज़रूरी है। इसलिए बछिया को सिर्फ दूध नहीं, सही पोषण चाहिए।

SOLUTION–डॉक्टर कॉफ स्टार्टर (Doctor Calf Starter)

आज का ध्यान, कल का समाधान

डॉक्टर कॉफ स्टार्टर (Doctor Calf Starter) खास तौर पर बछिया के पहले 90 दिनों के लिए वैज्ञानिक रूप से बनाया गया है। डॉक्टर कॉफ स्टार्टर (Doctor Calf Starter) देने से होने वाले फायदे :-

- रूमेन विकास में सहायक
- जल्दी ठोस आहार की आदत
- शीघ्र दूध छुड़ाने में सहायक
- बछिया की तेज़ और संतुलित वृद्धि
- मजबूत हड्डियाँ और बेहतर शरीर बनावट
- कम बीमारी, कम इलाज खर्च
- मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता

कब और कितना खिलाएं –

जन्म के सातवें (7th) दिन से थोड़ी थोड़ी मात्रा में शुरू करके 1 महीने की उम्र तक धीर-धीरे मात्रा बढ़ाते जाएँ

• 1-2 महीने - 1-2 किलोग्राम प्रति बछिया प्रतिदिन	• 2-3 महीने - 2-3 किलोग्राम प्रति बछिया प्रतिदिन

सुझाव - डॉक्टर कॉफ स्टार्टर के बेहतर परिणाम लेने के लिए कृपया इन बातों का ध्यान रखें।

Do's & Don'ts - 1–3 महीने में क्या करें, क्या न करें

Do's – ये जरूर करें

- बछिया को जन्म के 1 घंटे के अंदर पहला गाढ़ा पीला दूध (Colostrum) जरूर पिलाएँ
- नाभि को आयोडीन से साफ करें
- 7वें दिन से थोड़ी मात्रा में डॉक्टर कॉफ स्टार्टर (Doctor Calf Starter) देना शुरू करें
- हमेशा ताजा और सूखा डॉक्टर कॉफ स्टार्टर (Doctor Calf Starter) दें
- साफ पानी हर समय उपलब्ध रखें
- टीकाकरण और डी-वॉर्मिंग समय पर कराएं
- कमजोरी, दस्त या सुस्ती दिखे तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें
- 45-50 दिन तक सूखा और हरा चारा न खिलाएं

DON'Ts – ये गलती न करें

- जन्म के बाद Colostrum देने में देर न करें
- बछिया को सीधे वयस्क पशुओं का चारा न खिलाएं
- डॉक्टर कॉफ स्टार्टर (Doctor Calf Starter) अचानक बंद न करें
- दूध एकदम से बंद न करें – धीरे-धीरे कम करें
- गंदे बर्तन या गंदा पानी इस्तेमाल न करें
- बछिया को कीचड़ या गीली जगह पर न रखें
- बीमारी के लक्षण दिखने पर नजरअंदाज न करें

2. डॉक्टर काफ ग्रोवर (Doctor Calf Grower)

4 से 6 महीने की उम्र बछिया की ज़िंदगी का सबसे निर्णायक समय होता है। इस समय शरीर का ढांचा बनता है और वजन में तेज वृद्धि का उपयुक्त समय होता है। इसी दौरान तय होता है कि बछिया बड़ी होकर कितनी दूध देने वाली गाय/भैंस बनेगी I इस समय पर सिर्फ पेट भरना नहीं, वैज्ञानिक पोषण जरूरी होता है।

Solution – डॉक्टर कॉफ ग्रोवर (Doctor Calf Grower)

आज का ध्यान, कल का समाधान

डॉक्टर कॉफ ग्रोवर (Doctor Calf Grower) खास तौर पर 4 से 6 महीने की बढ़ती हुई बछियों के लिए वैज्ञानिक रूप से बनाया गया है।

डॉक्टर कॉफ ग्रोवर (Doctor Calf Grower) से होने वाले फायदे :-

- तेज़ और संतुलित शारीरिक विकास
- मजबूत शरीर और हड्डियों का विकास
- कम बीमारी, कम दवाई खर्च
- जल्दी और स्वस्थ यौवन और बेहतर प्रजनन क्षमता
- भविष्य में ज़्यादा दूध और ज़्यादा कमाई

कब और कितना खिलाएं –

4 महीने की उम्र से शुरू करके 6 महीने की उम्र तक 2-3 किलोग्राम प्रति बछिया प्रतिदिन

Do's & Don'ts - 4–6 महीने में क्या करें, क्या न करें

Do's – ये जरूर करें

- रोज़ सही मात्रा में डॉक्टर कॉफ ग्रोवर (Doctor Calf Grower) दें
- हरा चारा और सूखा चारा साथ में दें
- हर समय साफ पानी उपलब्ध रखें
- बछिया को खुली, साफ और सूखी जगह रखें
- डी-वॉर्मिंग और टीकाकरण समय पर कराएं

DON'Ts – ये गलती न करें

- अचानक खाना या फीड न बदलें
- फफूंद लगा, सड़ा या गीला चारा न दें
- सिर्फ भूसा या सिर्फ घास पर न रखें
- गंदे बर्तन और गंदा पानी न दें
- कमजोरी या दस्त को नजरअंदाज न करें

3. डॉक्टर हीफकेयर (Doctor HeifCare)

7 महीने की आयु से ब्यांत के 21 दिन पहले तक अगर इस समय सही पोषण नहीं मिला, तो पहली ब्यांत निश्चित तौर पर देरी से होगी और वह पशु कभी भी अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुँच पाएगा।

Solution – डॉक्टर हीफकेयर (Doctor HeifCare)

आज का ध्यान, कल का समाधान

डॉक्टर हीफकेयर (Doctor HeifCare) खास तौर पर इस उम्र की बछड़ियों के लिए वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया है।

डॉक्टर हीफकेयर (Doctor HeifCare) से होने वाले फायदे :-

- बेहतर शारीरिक विकास में सहायक
- जननांगों के बेहतर विकास में सहायक
- थनो के उचित विकास में सहायक
- शारीरिक स्थिति स्कोर (BCS) की वृद्धि में सहायक
- 12-14 महीने की उम्र तक गर्भाधान के लिए तैयार

कब और कितना खिलाएं –

सातवें महीने की उम्र से शुरू करके पहली ब्यांत के 21 दिन पहले तक 2-3 किलोग्राम प्रति बछिया प्रतिदिन खिलाएं
सातवें महीने की उम्र से पहली ब्यांत के 21 दिन पहले तक, क्या करें, क्या न करें

Do's – ये जरूर करें

- रोज़ संतुलित डॉक्टर हीफकेयर (Doctor HeifCare) फीड दें
- हरा चारा और सूखा चारा जरूर दें
- शरीर का वजन और बॉडी कंडीशन देखें
- डी-वॉर्मिंग और टीकाकरण समय पर करें
- खुला, साफ और आरामदायक स्थान दें

DON'Ts - क्या न करें

- सिर्फ भूसा या घास पर निर्भर न रहें
- मोटा या बहुत दुबला न होने दें
- अचानक फीड न बदलें
- गंदा या फफूंद लगा चारा न दें
- कमजोरी या देरी से हीट आने को नजरअंदाज न करें

B. डॉक्टर ट्रांजीशन केयर कार्यक्रम (Doctor Transition Care program)

सबसे संवेदनशील समय की सबसे ज़रूरी देखभाल

PART 1

PART 2

PART 1

ब्यांत से पहले के 21 दिन इस समय मुख्य खतरे

- दूध बुखार (Milk Fever)
- थनैला का खतरा
- गर्भाशय की कमजोरी
- ब्यांत में परेशानी
- ब्यांत के बाद भूख न लगना

Solution- डॉक्टर ट्रांजीशन क्लोज़अप (Doctor Transition CloseUP)

पशुओं के लिए विज्ञान, किसानों के लिए वरदान

डॉक्टर ट्रांजीशन क्लोज़अप (Doctor Transition CloseUP) से होने वाले फायदे :-

- बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता
- थन/अयन का उचित विकास
- जेर गिरने में आसानी
- दूध बुखार और कीटोसिस (ketosis) से बचाव

कब और कितना खिलाएं –

ब्यांत के 21 दिन पहले से ब्यांत के दिन तक - 3 - 4 किलोग्राम प्रति पशु प्रतिदिन

Do's & Don'ts - क्या करें, क्या न करें

Do's – ये जरूर करें

- ब्यांत से 21 दिन पहले डॉक्टर ट्रांजीशन क्लोज़अप (Doctor Transition CloseUP) शुरू करें
- अच्छा हरा चारा और साफ सूखा चारा दें
- रोज़ पशु की भूख और चाल पर नजर रखें
- पशु के बैठने का स्थान साफ़ सुथरा और आरामदायक हो

DON'Ts - ये गलती न करें

- इस समय बहुत ज़्यादा दाना या हाई-एनर्जी फीड न दें
- पशु को बहुत मोटा या बहुत दुबला न होने दें
- अचानक फीड या राशन न बदलें
- फफूंद लगा या गीला चारा न दें
- गंदगी या कीचड़ वाली जगह में न रखें
- कमजोरी, सूजन या भूख कम होने को नजरअंदाज न करें

PART 2

ब्यांत के बाद के 21 दिन (Fresh Cow Period) इस समय मुख्य खतरे

- भूख न लगना
- कीटोसिस (Ketosis)
- फैटी लिवर
- थनैला
- गर्भाशय संक्रमण ब्यांत के बाद समय से हीट में न आना
- पशु का अपनी पूरी क्षमता तक दूध पर न आना

Solution- डॉक्टर ट्रांजीशन फ्रैश (Doctor Transition Fresh)

पशुओं के लिए विज्ञान, किसानों के लिए वरदान

डॉक्टर ट्रांजीशन फ्रैश (Doctor Transition Fresh) से होने वाले फायदे :-

- दूध ग्रंथियों को तुरंत ऊर्जा देता है और पशु को दूध के उच्चतम स्तर तक जल्दी पहुँचाता है
- शरीर को नेगेटिव एनर्जी बैलेंस से बचाता है
- फैटी लिवर और कीटोसिस का खतरा कम करता है
- थनैला से सुरक्षा
- इम्युनिटी मजबूत करता है
- गर्भाशय को पुनः सामान्य आकार में लाने में मदद करता है जिससे हीट सही समय पर आती है, दूध लंबे समय तक बना रहता है और पूरी दुग्धावस्था में ज्यादा उत्पादन मिलता है

Do's & Don'ts – पशु के ब्याने के 1 महीने के दौरान क्या करें, क्या न करें

Do's – ये जरूर करें

- ब्यांत के बाद डॉक्टर ट्रांजीशन फ्रैश फीड (Doctor Transition Fresh) शुरू करें
- साफ पानी हमेशा उपलब्ध रखें
- हरा चारा, सूखा चारा और संतुलित दाना साथ दें
- रोज़ दूध, भूख और गोबर पर नजर रखें
- थन और योनि की साफ-सफाई रखें
- पशु को आरामदायक, सूखी जगह पर रखें

DON'Ts - ये गलती न करें

- सिर्फ भूसा या सिर्फ घास पर पशु न रखें
- कमजोरी, कंपकंपी या भूख कम होने को नजरअंदाज न करें
- गंदा पानी या फफूंद लगा चारा न दें
- थनैला या डिस्चार्ज को हल्के में न लें
- ज्यादा भीड़ या तनाव वाली जगह में न रखें

C. डॉक्टर लैक्टेशन केयर कार्यक्रम (Doctor lactation care program)

हर पशु की क्षमता के अनुसार सही पोषण

जैसा कि आप जानते हैं, हर पशु की दूध उत्पादन क्षमता अलग होती है, इसलिए सभी के लिए एक-सा आहार सही नहीं होना चाहिए। बेहतर स्वास्थ्य, संतुलित पोषण और अधिक लाभ के लिए दूध क्षमता के अनुसार विशेष रूप से तैयार उत्पाद देना आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पशओं की अनुवांशिक और उत्पादन क्षमता के अनुसार डॉक्टर फीड्स आपके पशुओं के लिए निम्नलिखित उत्पाद प्रस्तुत करते हैं।

1. डॉक्टर डी 40 (Doctor D40)

40 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखने वाली गाय के लिए उपयुक्त है क्यूंकि ऐसे पशुओं की पोषण की जरुरत अन्य पशुओं के मुकाबले अधिक होती है

मुख्य लाभ

- अधिकतम दूध उत्पादन को सपोर्ट
- नेगेटिव एनर्जी बैलेंस से सुरक्षा
- बेहतर फैट, SNF और रिकवरी
- थनैला और मेटाबॉलिक रोगों का खतरा कम
- BCS को बनाए रखना

कितना खिलाना है

प्रति 2.5 लीटर दूध पर 1 किलोग्राम डॉक्टर डी 40 (Doctor D40) प्रति गाय प्रतिदिन, उत्तम गुणवत्ता की साइलैज के साथ खिलाएं।

2. डॉक्टर डी 35 (Doctor D 35)

35 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखने वाली गाय और 15 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखने वाली भैंस के लिए उपयुक्त है क्यूंकि उनकी ऊर्जा व पोषण ज़रूरतें अधिक होती हैं।

मुख्य लाभ

- उच्च दूध उत्पादन को बनाए रखता है
- बेहतर फैट और SNF
- प्रजनन क्षमता को सपोर्ट
- इम्यूनिटी और मेटाबॉलिक संतुलन में सुधार
- BCS को बनाए रखना

कितना खिलाना है

शारीरिक रख रखाव के लिए-1.5- 2.0 किलोग्राम प्रति पशु प्रतिदिन

गाय - प्रति 2.5 लीटर दूध पर 1 किलोग्राम डॉक्टर डी 35 (Doctor D 35) प्रति गाय प्रतिदिन

भैंस - प्रति 2 लीटर दूध पर 1 किलोग्राम डॉक्टर डी 35 (Doctor D 35) प्रति भैंस प्रतिदिन

3. डॉक्टर डी 30 (Doctor D 30)

30 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखने वाली गाय और 12 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखने वाली भैंस के लिए उपयुक्त है

मुख्य लाभ

- दूध उत्पादन को स्थिर बनाए रखता है
- शरीर का वजन और ऊर्जा संतुलन बनाए रखता है
- थकान और कमजोरी से बचाव
- बेहतर फैट और SNF सपोर्ट
- BCS को बनाए रखना

कितना खिलाना है

शारीरिक रख रखाव के लिए-1.5- 2.0 किलोग्राम प्रति पशु प्रतिदिन

गाय - प्रति 2.5 लीटर दूध पर 1 किलोग्राम डॉक्टर डी 30 (Doctor D 30) प्रति गाय प्रतिदिन

भैंस - प्रति 2 लीटर दूध पर 1 किलोग्राम डॉक्टर डी 30 (Doctor D 30) प्रति भैंस प्रतिदिन

Do's – (क्या करें)

- पशु आहार को चारे के साथ मिलाकर खिलाएं
- हर समय साफ और ताज़ा पानी उपलब्ध रखें
- दूध उत्पादन के अनुसार संतुलित पशु आहार दें (जैसे डॉक्टर D40 / डॉक्टर D35 / डॉक्टर D30)
- समय पर दुहाई करें – रोज़ एक ही समय पर
- दुहाई से पहले और बाद में थन साफ करें
- हरा चारा/ साइलेज (sileage), सूखा चारा और पशु आहार का संतुलन बनाए रखें
- पशु को आरामदायक और साफ जगह दें
- बीमारी के लक्षण (भूख कम, दूध कम, सुस्ती) पर तुरंत ध्यान दें

DON'Ts – (क्या न करें)

- गंदा या बासी चारा न दें
- अचानक आहार न बदलें
- दूध देने वाले पशु को भूखा न रखें
- थन गंदे हाथ या कपड़े से न छुएँ
- बीमार पशु को नजरअंदाज न करें
- बहुत ज़्यादा या बहुत कम पशु आहार (कंसंट्रेट) न दें

दुग्धकाल के दौरान पशु के दूध उत्पादन, आहार सेवन और शरीर वजन में होने वाले बदलाव

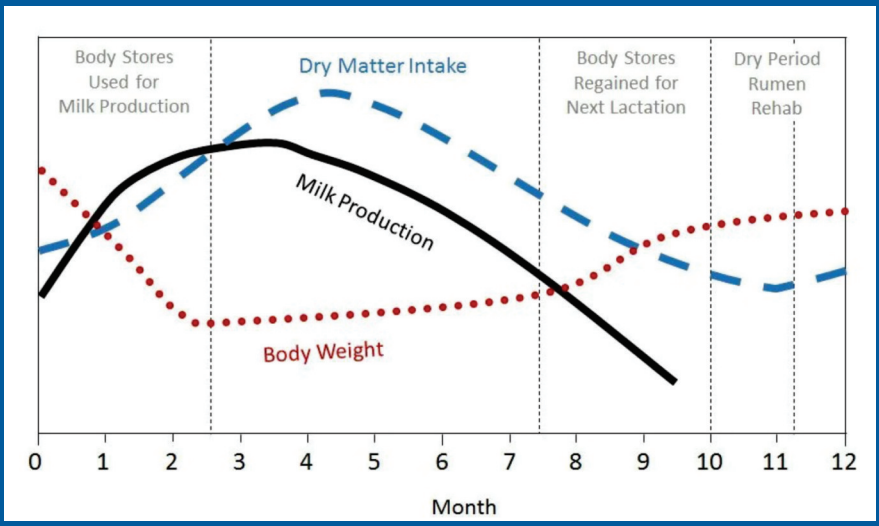

डेयरी किसानों के लिए अच्छी प्रबंधन प्रथाएं

1. कीड़े निकालने (डीवॉर्मिंग) की महत्वपूर्ण सलाह

पशुओं में कीड़े (परजीवी) दूध उत्पादन कम करने, वजन घटाने और स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनते हैं। नियमित डीवॉर्मिंग से पशु स्वस्थ रहते हैं और चारे का बेहतर उपयोग करते हैं।

- संकेत पहचानें : अगर पशु में दस्त, गोबर में' बदबू, कमजोरी, बालों का गिरना, भूख न लगना जैसे लक्षण दिखें, तो तुरंत डीवॉर्मिंग करें।
- समय-सारणी :
  - बछड़ों के लिए: जन्म के 1 महीने बाद पहली डोज, 6 महीने की उम्र तक हर महीने, फिर हर 3 महीने में।
  - वयस्क गायों/भैंसों के लिए: वर्ष में 3-4 बार, विशेष रूप से मानसून से पहले (जून-जुलाई) और बाद (सितंबर-अक्टूबर) में।
  - गर्भवती पशुओं के लिए: प्रसव से 1-2 महीने पहले।
- डीवॉर्मर का चयन: पशु चिकित्सक की सलाह से ब्रॉड-स्पेक्ट्रम डीवॉर्मर जैसे एल्बेंडाजोल, आइवरमेक्टिन या फेनबेंडाजोल का उपयोग करें। खुराक पशु के वजन के अनुसार दें।
- सावधानियां: डीवॉर्मिंग के बाद पशुओं को साफ पानी और पौष्टिक आहार दें।
- रोकथाम: चरागाह को साफ रखें, मल को अलग-अलग जगह पर डालें और कीड़ों के संपर्क से बचाएं।

2. पोषण और चारा प्रबंधन

- संतुलित आहार : हरा चारा (जैसे बरसीम, ज्वार), सूखा चारा (भूसा) और पशु आहार का मिश्रण दें (TMR करें)।
- मिनरल सप्लीमेंट: कैल्शियम, फॉस्फोरस और विटामिन की कमी से बचने के लिए मिनरल मिक्सचर मिलाएं। हमारे फीड में ये पहले से मौजूद हैं।
- पानी की उपलब्धता: हमेशा साफ और पर्याप्त पानी उपलब्ध रखें (1लीटर दूध के लिए 4-5 लीटर पानी और 30-40 लीटर पानी शरीर की अन्य आवश्यकताओं के लिए प्रति पशु /दिन)।
- फीडिंग टाइम: सुबह-शाम नियमित समय पर फीड दें, और पशुओं को उनकी दूध देने की क्षमता अनुसार पशु आहार खिलाएं।

3. आवास और स्वच्छता प्रबंधन

- शेड डिजाइन: छायादार, हवादार और सूखा शेड बनाएं। पशुओं को पर्याप्त जगह दें।
- स्वच्छता: रोजाना गोबर साफ करें, फर्श को सूखा रखें और कीटाणुनाशक से धोएं।
- आराम: पशुओं के लिए नरम बिस्तर (स्ट्रॉ या रबर मैट) प्रदान करें ताकि वे आराम से बैठ सकें।

4. स्वास्थ्य और टीकाकरण

- टीकाकरण: एफएमडी (खुरपका-मुंहपका), एचएस (हेमोरेजिक सेप्टिसीमिया) और ब्रुसेलोसिस के टीके समय पर लगवाएं।
- मिल्किंग प्रैक्टिस: हाथ धोकर, साफ तरीके से दूध निकालें। डिपिंग सॉल्यूशन से थनों को साफ करें।
- रोग निगरानी: पशु चिकित्सक से मासिक जांच करवाएं। बीमार पशु को अलग रखें।

5. प्रजनन और उत्पादकता बढ़ाने के टिप्स

- हीट डिटेक्शन: पशु की हीट साइकिल पर नजर रखें और सही समय पर एआई (आर्टिफिशियल इंसेमिनेशन) करवाएं।
- बछड़ों की देखभाल: जन्म के तुरंत बाद कोलोस्ट्रम पिलाएं और अलग जगह रखें।
- रिकॉर्ड रखना: दूध उत्पादन, फीड खपत और स्वास्थ्य का रिकॉर्ड बनाएं ताकि सुधार कर सकें।

इन प्रथाओं को अपनाकर आप अपने डेयरी फार्म को लाभदायक बना सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : डॉक्टर फीड्स, फ़ोन नंबर 9216063150

Doctor®
FEEDS
Where Care Meets Nutrition

DOCTOR AGROVET PVT. LTD.

Naraina Road, Dudu-303008
Dist.- Jaipur (Rajasthan)
+91-9216063150

www.doctoragrovet.in
info@doctoragrovet.com